"ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार"

-शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी साळुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, संचलित

विवेकानंद महाविद्यालय (स्वायत्त), कोल्हापुर

'हिंदी विभाग'

शै. वर्ष : 2019-20

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के निर्देशानुसार सत्र VI के अंतर्गत मूल्यमापन के तहत

प्रोजेक्ट लेखन

हिंदी पेपर नं. 13

साहित्यशास्त्र

प्रोजेक्ट विषय : गजल

अ. क्र.	छात्रों के नाम	रोल नं	हस्ताक्षर
1	ऋषिकेश उत्तम भोसले	5511	R.U.Bhosale
2	मित्तल सर्जेराव खोत	5588	
3	केदार विजय मधाळे	5611	
4	अमृता महादेव संकपाळ	5682	A Sankpal

सहायक प्राध्यापक	हिंदी विभागाध्यक्ष	प्राचार्य
डॉ. डी. आर. तुपे	डॉ. आरिफ महात	डॉ. एस.वाय होनगेकर

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR 416 003 ESTD JUNE 1964

अनुक्रमणिका

पृष्ठ. क्र.

① गजल का अर्थ -	3
② गजल की परिभाषाएँ -	4
③ गजल के अंग -	6
[3.1] काफिया	6
[3.2] रदीफ	7
[3.3] शेर →	8
[3.3.1] - मतला	8
[3.3.2] - मकता	9
[3.4] मिसरा	10
④ निष्कर्ष -	11

GOODLUCK

DATE / /

प्रस्तावना

गजल का अर्थ ही उस आर्त पुकार से है, जो शिकारियों के द्वारा निर्दयता से चुभोनेवाले तीर से आहत हिरन (गिजाल) द्वारा हृदय द्रावक रूप से निकलती है।

गजल का एक ही चरण कवि के अंतर्ज्ञान के विराट दर्शन करने में समर्थ होता है।

गजल की आत्मा ही तीव्रानुभूति है। आंतरिक पीड़ा, प्रेम की विरहजन्य वेदना, प्रभाति के तुषार कण के समान हृदयस्पर्शी होती है। शब्द-शब्द से रस प्रस्फुटित होता है। 'एको रसः करुणाएव' से गजल अंतर्बाह्य आर्द्र होती है।

संक्षेप में वीर तथा भयानक रस के अतिरिक्त सभी रसों से सराबोर होकर रस टपकाती रहती है।

निष्कर्ष रूप में गजल साहित्य के तत्वों तथा रचना शिल्प विधान की कसौटी पर उच्च कोटि की गेय विधा है। गजल अपनी कोमलता, माधुर्य एवं संगीतात्मकता से जन-जन के हृदय में स्थान पाने की क्षमता रखती है।

www.youvaworld.com

Date : Page :

Topic :

★ ग़ज़ल शब्द का अर्थ :

ग़ज़ल शब्द की व्युत्पत्ति के बारे में एकमत नहीं है। ग़ज़ल यह अरबी भाषा का शब्द है। जिसका अर्थ है- 'प्रेमिका से वार्तालाप' या 'औरतों से बात करना'। ग़ज़ल का केंद्रिय विषय प्रेम होता है। ग़ज़ल के बारे में और एक शब्द मिलता है- 'ग़ज़ाल'। 'ग़ज़ाल' का अर्थ है- 'मृग'। सूचक है हिरन जैसी आँखोवाली सुन्दरियों के लिए इस शब्द का प्रयोग किया गया हो। ग़ज़ल शब्द की व्युत्पत्ति के बारे में और एक मान्यता है कि अरब में ग़ज़ल नाम का एक कवि था। इस कवि ने अपने पूरे जीवन में प्रेम को महत्त्व दिया, प्रेमपूरक कविता लिखी। अतः उसीके नाम पर इस विधा का नामकरण हुआ।

मानक हिन्दी शब्दकोष खंड दो में ग़ज़ल शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है- 'वह कविता जिसमें नायिका के सौंदर्य और उसके प्रेम के प्रति वर्णन हो। ग़ज़ल के बारे में अंग्रेजी में भी कहा गया है कि 'The Conversation with women'.

'ग़ज़ल' शब्द प्रेमी और प्रेमिका के वार्तालाप के लिए था और के बात करने के अर्थ में प्रयुक्त हुआ था, लेकिन अब उसमें परिवर्तन आया है, विविध विषयों को लेकर ग़ज़लें लिखी जा रही है।

www.youvaworld.com

Date : Page :

Topic :

★ ग़ज़ल की परिभाषाएँ :

साहित्य के अंतर्गत हर विधा को परिभाषित करने की एक परंपरा दिखाई देती है। ग़ज़ल जैसी प्रेमाभिव्यक्ति की विधा इससे कैसी अछूती रह सकती है? ग़ज़ल शब्द की व्युत्पत्ति या अर्थ के बारे में विद्वानों में मतभेद दिखाई देते हैं, लेकिन उनमें इस बातपर एकमत हो गया है ग़ज़ल प्रेमाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। अनेक विद्वानों के अपनी-अपनी प्रतिभा के अनुसार ग़ज़ल को परिभाषित करने का प्रयास किया है। ग़ज़ल की परिभाषाएँ निम्नांकित हैं-

नालंदा विशाल शब्द सागर- नालंदा विशाल शब्दसागर में 'फारसी और उर्दू में शृंगार रस की कविता' कहा है।

हिंदी साहित्य कोश भाग एक- हिंदी साहित्य कोश भाग एक में ग़ज़ल के बारे में लिखा है कि, "ग़ज़ल में प्रेमभावनाओं का चित्रण होता है। ग़ज़ल का शाब्दिक अर्थ है- नारियों से प्रेम की बातें करना।"

फ़िराक़ गोरखपुरी- "ग़ज़ल असंबद्ध कविता है। ग़ज़ल का मिजाज मूलतः समर्पणवादी होता है।"

डॉ. अब्दुल जमाल- "ग़ज़ल का मतलब है औरतों से अथवा औरतों के बारे में बातचीत करना। यह भी कहा जा सकता है कि ग़ज़ल का सर्वसाधारण अर्थ है- माशूक से बातचीत का माध्यम।"

www.youvaworld.com
Date : Page :
Topic :

डॉ. नगेंद्र - "गजल उर्दू काव्य का सर्वाधिक प्रसिद्ध और सरस भेद है। उसका स्थायी भाव प्रेम है, जिसमें रहस्यानुभूति, मस्ति, रिन्दी, धार्मिक-विद्रोह आदि भावनाएँ संचारी रूप से ओत-प्रोत रहती हैं, विषय के अनुरूप उसका एक विशिष्ट-काव्यरूप भी है जो मतला, मकता, काफिया रदीफ में परिबद्ध रहता है।"

डॉ. सरदार मुजावर - "मन के भावों को शेरों के माध्यम से अभिव्यक्त करने की कला का नाम है - गजल।"

डॉ. मधु खराटे - "गजल वह गेयात्मक विधा है, जिसमें प्रेम की विभिन्न अवस्थाओं का चित्रण किया जाता है। साथही जिसमें सामाजिक, राजनीतिक एवं हास्य-व्यंगात्मक भावभूमि पर सामान्य व्यक्ति के मानस में दबी पीडा को वाणी प्रदान की जाती है, जो प्रभावोत्पादक गुणों से युक्त होती है और जिसका अपना एक रूप होता है।"

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधारपर सही कहा जाता है कि, गजल गेयात्मक विधा है। गजल मन के भावों की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। गजल के अनेक विषय हो सकते हैं। गजल में व्यंग्यात्मकता भी होती है। गजल में प्रेम के दोनों पक्षों का चित्रण होता है। अर्थात संयोग और वियोग चित्रण होता है। गजल में साधारणतः चौदह पंक्तियाँ होती है। संक्षिप्तता और भावात्मकता यह गजल की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ हैं। गजल पाठकों के मन तथा मस्तिष्क पर प्रभाव डालती है।

www.youvaworld.com

Date : Page :

Topic :

★ ग़ज़ल के अंग :

संसार की किसी भी वस्तु का या पदार्थ का अपना रूप होता है, जिससे उसकी पहचान बनती है। केवल भाव या भाषा के आधार पर किसी रचना को रचना नहीं कहा जाता। हर रचना का अपना एक अलग रूप होता है। ग़ज़ल का भी अपना एक रूप है। साहित्य के अन्य विधाओं के जिस प्रकार अलग-अलग अंग दिखाई देते हैं उसी तरह ग़ज़ल के भी अंग है। ग़ज़ल के निम्नांकित अंग हैं-

काफ़िया - ग़ज़ल में पायी जानेवाली तुक को काफ़िया कहते हैं। ग़ज़ल के शेरों में रदीफ़ से पहले जो अंत्यानुप्रास शब्द आते हैं और जिसका प्रयोग तुक मिलाने की दृष्टि से किया जाता है, काफ़िया कहलाता है। ग़ज़ल में रदीफ़ की अपेक्षा काफ़िया का महत्व होता है।

उदा.: "मेरा दर्द तो नग़मों का अब ग़ुलाम हो गया है,
कभी गीत बन गया है, कभी जाम हो गया है,
करो माफ़ ज़िन्दगी को कोई और खेल खेलो
यह समाज का खिलौना बड़ा आम हो गया है।"

www.youvaworld.com

Date : Page :

Topic :

★ रदीफ :

ग़ज़ल के शेरों के अंत में जिन शब्दों का वही पुनरावृत्ति होती है उसे रदीफ़ कहते हैं। रदीफ काफिये के बाद आती है। और प्रत्येक शेर में अपनी जगह पर स्थिर रहती है। उसमें कभी परिवर्तन नहीं होता। अधिकतर ग़ज़लों में रदीफ का प्रयोग होता है। अपवादात्मक रूप में ग़ज़ल में रदीफ का प्रयोग नहीं किया जाता। रदीफ ग़ज़ल के लिए विशेष आवश्यक है ऐसा भी नहीं है।

उदा. : "क्या बात थी कि जो भी सुना, अनसुना हुआ
दिल के नगर में शोर था कैसा मचा हुआ,
खोया था एक पल को दुनिया को क्या बदल गई
उट्ठा तो सोचता हूँ, ये दुनिया को क्या हुआ।"

उपर्युक्त ग़ज़ल के शेरों में 'हुआ' शब्द का प्रयोग रदीफ के रूप में किया गया है।

www.youvaworld.com

Date : Page :

Topic :

★ शेर :

शेर यह शब्द अरबी भाषा का है, जिसका शाब्दिक अर्थ है - 'केश या बाल।' जिस प्रकार किसी सुंदर युवती की सुन्दरता बढाने के लिए केश या बाल सहायक होते हैं वैसे ही किसी गजल के भावसौंदर्य के लिए उसके शेरों का जानदार होना आवश्यक होता है। गजल के प्रत्येक शेर का अपना स्वतंत्र भावचित्र अंकित करता है। इसी कारण शेर को 'गजल की अधिकारिक इकाई' कहा जाता है।

उदा. : "मेरे सीने में न सही, तेरे सीने में सही।
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।"

उपर्युक्त शेर में दुष्यंत कुमारजीने क्रांति या परिवर्तन की आग का जिक्र किया है।

गजल के शेर के दो रूप दिखाई देते हैं - 1) मतला और 2) मकता।

1) मतला - गजल का पहला शेर मतला कहलाता है। इनकी दो पंक्तियों में रदीफ और काफिया होता है, जब कि अन्य शेरों की दूसरी पंक्ति में ही यह विशेषता पायी जाती है।

उदा. : "अश्क वही जो तारा बनकर पलकों पर ठहरता है
दर्द वही जो मीठे-मीठे गीतों में ढल जाता है।"

उपर्युक्त शेर की दोनों पंक्तियों में 'ठहरता' 'जाता' काफिया है।

www.youvaworld.com

Date : Page :

Topic :

तथा 'है' रदीफ का प्रयोग मिलता है। जिससे दोनों पंक्तियों में तुक मिलती है। अतः यह शेर ग़ज़ल का मतला कहा जायेगा।

2) मक्ता - ग़ज़ल के अंतिम शेर को 'मक्ता' कहते हैं। अरबी में मक्ता का शाब्दिक अर्थ है - 'कटा हुआ'। इसमें कवि अपने उपनाम का प्रयोग करता है। यह उपनाम पढ़ते ही हम समझ जाते हैं कि यहाँ ग़ज़ल पूरी हो गयी हो। यहाँ पर ग़ज़लकार के भावों की सीमा (चरमसीमा) का महत्व होता है। यह ग़ज़ल का सर्वश्रेष्ठ शेर माना जाता है। अगर किसी ग़ज़ल के समाप्ति पर अंतिम शेर में उपनाम न हो तो उसे केवल ग़ज़ल का आखिरी शेर कहा जाता है।

उदा.: "हमको मालूम है, जन्नत की हकीकत, लेकिन
दिल के खुश रखने को 'ग़ालिब' यह ख्याल
अच्छा है।"

उपर्युक्त शेर में 'ग़ालिब' उपनाम का प्रयोग किया गया है। अतः इसे मक्ता कहा जायेगा।

www.youvaworld.com

Date : Page :

Topic :

* मिसरा :

शेर के प्रत्येक पंक्ति को मिसरा कहते हैं। दो मिसरे मिलकर एक शेर की संरचना होती है। शेर के दूसरे मिसरे में रदीफ एवं काफिये का प्रयोग किया जाता है।

उदा.: "मजा तो ये है कि होते हैं वो जो मुझसे खफा,
तो और आता है उनपर जियादह प्यार मुझे।"

उपर्युक्त शेर की दोनों पंक्तियों मे अलग-अलग मिसरे हैं। अंतिम मिसरे में 'प्यार मुझे' में रदीफ और काफिया का प्रयोग मतले के आधारपर किया गया है।

www.youvaworld.com

Date : _____ Page : _____

Topic :

★ निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि, गजल अरबी भाषा का शब्द है, व्युत्पत्ति की दृष्टि से भलेही उसके अर्थ अलग-अलग होंगे। गजल एक स्वतंत्र विधा है। गजल में काफिया, रदीफ का महत्व होता है। गजल में प्रत्येक अंग का अपना अपना महत्व है। शेर को गजल की अधिकारिक इकाई माना गया है। शेर को दो भेदों में मतला और मकता का भी उतनाही महत्व है जितना की अन्य अंगों का गजल में होता होती है। गजल में प्रवाहमयता, भावात्मकता, प्रभावात्मकता की आवश्यकता होती है।

प्रतिज्ञापत्र

हम शपथपूर्वक घोषित करते हैं कि, प्रस्तुत प्रोजेक्ट लेखन का कार्य हमारे खुद के प्रयत्नों का परिणाम है। हमारी जानकारी के अनुसार इस विषय पर अब तक स्वतंत्र रूप से कोई कार्य संपन्न नहीं हुआ है। यह प्रोजेक्ट हमारे विषय अध्यापकों के मार्गदर्शन तथा संदर्भ स्त्रोतों के आधार पर संपन्न हुआ है।

अ. क्र.	छात्रों के नाम	रोल नं	हस्ताक्षर
1	ऋषिकेश उत्तम भोसले	5511	R.U.Bhosale
2	मित्तल सर्जेराव खोत	5588	
3	केदार विजय मधाळे	5611	
4	अमृता महादेव संकपाळ	5682	A Sankpal

“ज्ञान, विज्ञान आणि सुसंस्कार यांसाठी शिक्षणप्रसार”

-शिक्षणमहर्षी डॉ. बापूजी सालुंखे

श्री स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्था, संचलित

विवेकानंद महाविद्यालय (स्वायत्त), कोल्हापुर

‘हिंदी विभाग’

शै. वर्ष : 2019-20

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर के निर्देशानुसार सत्र VI के अंतर्गत मूल्यमापन के तहत

प्रोजेक्ट लेखन

हिंदी पेपर नं. 12

विधा विशेष का अध्ययन

प्रोजेक्ट विषय : देशकाल, वातावरण एवं संवाद

अ. क्र.	छात्रों के नाम	रोल नं	हस्ताक्षर
1	ऋषिकेश उत्तम भोसले	5511	R.U.Bhosale
2	मित्तल सर्जेराव खोत	5588	
3	केदार विजय मधाळे	5611	
4	अमृता महादेव संकपाळ	5682	Sankpal

सहायक प्राध्यापक	हिंदी विभागाध्यक्ष	प्राचार्य
डॉ. डी. आर. तुपे	डॉ. आरिफ महात	डॉ. एस.वाय होनगेकर

VIVEKANAND COLLEGE KOLHAPUR-416 003 ESTD JUNE 1964

अनुक्रमणिका

अक्र.	शीर्षिक	पृष्ठ क्र.
1	प्रस्तावना	2
2	देश-काल-वातावरण	3-7
3	संवाद	8-10
4	प्रतिज्ञापत्र	12

REYNO

प्रस्तावना

कौसल्या बैंसंती ने अपने उपन्यास में उस वक्त की स्थिती को हमारे सामने लाया है। उस वक्त लोगों की परिस्थिती बहुत गरीब थी। लोगों को दो वक्त का खाना भी नसीब नहीं होता था। लेकीन उस परिस्थिती में भी लेखिका को उनके माँ ने पढ़ाया था।

पहले से ही औरतों को दुय्यम दर्जा दिया जाता था। इसलिए औरते ज्यादा घर से बाहर तक नहीं निकलती थी। और कोई निर्णय भी खुद नहीं लेती थी। उस वक्त देश में अस्पृश्य को बहुत मानते थे, मतलब जाति- पाति, उच्च - निच्य, अमीर- गरिबी को मानते है

लेखिका ने उस वक्त देशकाल वातावरण को अपने उपन्यास द्वारा प्रस्तुत किया है।

Page No.
Date:

उद्देश्य

कौसल्या बैसंत्री के दोहरा अभिशाप इस उपन्यास में दलितों, अस्पृश्यों के प्रति देश-काल वातावरण को प्रस्तुत किया है, उसका अभ्यास करना।

साथ-ही-साथ उपन्यास में जो भी संवाद है उनको प्रस्तुत करना।

REYNO

देश-काल

वातावरण

प्राचीन काल से भारत में सवर्ण और अस्पृश्य यह भेद चला आ रहा है। वर्ण व्यवस्था को प्राधान्य मिलने के कारण अस्पृश्यों की स्थिती दयनीय रही। म. गाँधीजी ने अस्पृश्यों को हरिजन कहकर उन्हें राष्ट्रीय प्रवाह में लाने की चेष्टा की पर हरिजन कहने से उनकी स्थिति में कुछ खास बदलाव नहीं आया। स्वतंत्र भारत में अस्पृश्यों के विकास के लिए अनेक कानून बनाए गए पर जब तक मानसिक परिवर्तन नहीं होता तब तक समाज को सब कुछ सहना पड़ताहै।

'दोहरा अभिशाप' इस आत्मकथा में कौसल्या बैसंती ने उन सब असहनीय पीड़ाओं का लेखाजोखा प्रस्तुत किया है। उन्होंने ढाक ढोली सामाजिक व्यवस्था में साँस ली है, जो बेहद क्रूर और अमानवीय है। दलितों के प्रती असंवेदनशील भी है। 'दोहरा अभिशाप' पढ़ते समय हमारे सामने उस काल की धार्मिक व्यवस्था, अंधश्रद्धा, पशुबली, जाति की प्रबलता, सवर्ण- असवर्णों का अंतर, अस्पृश्य- अस्पृश्य में भी उच्च - नीचता का आदि बहुतसी बातों पर प्रकाश डाला है। अपृश्य, असवर्ण या महार कितना भी पढ़ले लेकिन जात उसका पिछा नहीं छोड़ती और उसे पद- पदपर अपमानित रखा जाता है। इन सब घटनाओं का जिता- जागता वर्णन आपबीती के रुप में 'दोहरा अभिशाप' में साकार हो उठा है। स्वतंत्रता से पहले और बाद के देश, काल और वातावरण का वर्णन करने में कौसल्या बैसंती को कुछ मात्रा में सफलता मिली है।

कौसल्या बैसंती की आत्मकथा उनकी नानी से शुरु होती है। आमतौर पर किसी भी गाँव के ढाक और दलितों की बस्ती होती है,

REYNO

उसी प्रकार नागपूर की बस्ती का भी वर्णन किया है आजी और माँ-बाबा जिस बस्ती में रहते थे, उस बस्ती का नाम खलासी लाईन था। यह बस्ती नागपूर स्टेशन के के नजदीक थी। रेलगाडी की दिन-रात आवाज सुनाई देती थी। गाडियाँ भी नजर आती थी। बस्ती से सटा एक नाला बहता था। नाले के साथ ही एक पक्की सड़क बनी थी, और दूसरी ओर बड़े-बड़े पक्के मकान थे जहाँ बड़ी जाति के लोग रहते थे। वे नौकरी करते थे। बस्ती में अधिकांश अछूत थे, अनपढ़ और मजदूर थे। सड़क के एक ओर गरीब, अशिक्षित और सड़क के दूसरी ओर अमीर पढ़े-लिखे थे। सिर्फ एक सड़क उनको विभाजित करती थी। जमीन-आसमान का फरक था दोनों में।

कौसल्या बैसंती ने जब स्कूल में प्रवेश किया तब स्कूल के द्वार अछूत के लिए खुल चुके थे। लेकिन सवर्णों के बच्चों में और अस्पृश्यों के बच्चों में एक अँतर था। इसका उन्होंने जो वर्णन किया है वह उस काल की परिस्थिती पर प्रकाश डालता है। 'अभी तक मैं बस्ती के ही वातावरण में पली थी। बस्ती के लोग गरीब, अनपढ़ और गँवार थे। परंतु जब मैं मिडे कन्याशाला में आई तो यहाँ का वातावरण एकदम अलग प्रकार का था। मेरे पास अच्छा डिब्बा भी नही था। मैं अल्युमिनियम के डिब्बे में रोटी लाती थी। मैं लड़कियों के सामने अपना डिब्बा नहीं खोलती थी। मुझे अपने घटीया डिब्बे और घटिया रोटी को सबके सामने खोलाने में शर्म आती थी। दिवार की ओर मुँह करके खाना खाती थी। ताकि कोई देख न ले। उनके खाने की खुशबू और खाना देखकर मैं ललचा जाती थी। सोचती थी, ऐसा खाना मुझे कब नसीब होगा

अस्पृश्यों की बस्ती का और वहाँ की गंदगी का वर्णन कौसल्या जी ने किया है, जो हमारी समाज-व्यवस्था में पर प्रकाश डालता है 'बस्ती में बारिश की दिनों में सब जगह किचड़ ही कीचड़ नजर आता था। परंतु इन बड़े लोगों के घरों के आगे पक्की साफ-सुथरी सड़के थी। सीताबर्डी आदी की ओर से आने पर मेरा मन कभु बस्ती में घुसने का नहीं करता था। सामने ही पाखाने के पास से गुजरना पड़ता था। पाखाने के सामने बच्चे पाखाना करते नज़र आते थे। सारी जगह पाखाने से भरी रहती और उसी के सामने लोगों के घर थे।

डॉ. बाबा साहब आंबेडकर के विचारों का प्रभाव हमारे पूरे अस्पृश्य समाजपर छा गया था। उन्हीं के प्रयत्नों के कारण समाज में जाग्रती की लहर फैल गई थी। इसका वर्णन लेखिका ने इसप्रकार किया है - 'बाबा साहब की जयंती चौदह अप्रैल को हर अस्पृश्य बस्ती में मनाई जाती थी। हमारी बस्ती में एक सप्ताह पहले से ही सफाई शुरू हो जाती थी। औरते आँगन को खूब साफ करके गोबर से लिपती थीं। हमें गर्मी की छुट्टी हो जाती थी तब तक। हम राह देखा करते थे की कब चौदह अप्रैल आएगा। बस्ती में रोनक छा जाती थी। पूरी बस्ती की लाइनों को रंग-बिरंगी झंडियों से सजाया जाता था। बाबा साहब के विचारोंवाला 'जनता' नाम का अखबार वहाँ आता था। उसे पढ़कर पढ़े-लिखे बच्चे, लड़के उनके विचारों को जानने लगे।'

अशिक्षा, अज्ञान और परंपरा के कारण अस्पृश्यों में अंधश्रद्धा की मात्रा ज्यादा थी। खासकर कोई स्त्री-पुरुष बीमार हो जाता था, तब इसका

भयानक रूप सामने आ जाता था, तब इसका वर्णन भी कौसल्या बैंसंत्री ने खुलकर किया है, जो हमारी समाजव्यवस्था पर प्रकाश डालता है। आज भी इसमें कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ है। देवी माँ के क्रोध से वह बीमार हो जाता है। पूजा के लिए जो मन्नत मानी जाती थी, वह बीमार के ठीक होने पर पूरी की जाती थी। कोई बकरे की बली की, कोई गुड़-चावल की, कोई मुर्गे-मुर्गी की बलि चढ़ाने की मन्नत मानता था। पूजा का सामान बनिये के दुकान से मिल जाता था। जिस प्राणी की बलि देनी हो उसका सिर काटकर देवी के चरणों पर रखा जाता था। मुर्गी की टाक टाँग मंदिर में गाड़े गए बाँस पर बाँध दी जाती थी जिसे चील-कौवे लेकर भाग जाते थे। बकरे का सिर और पाँव पुजारी ले जाता था।"

दलितों के मन में अपनी जाति को लेकर जो भय की भावना है उसे भी लेखिका ने जगह-जगह रेखांकित किया है। दलित अपनी जाति छिपाना चाहता है, देश स्वतंत्र होने के बाद आंबेडकर के बौद्ध धर्म में दीक्षित होने के बाद भी आमआदमी की मानसिकता में कोई खास बदलाव नहीं आया है। दलितों में छीपे हुए भय के कारण सहज जीवन जी नहीं सकते।

देवेंद्र कुमार को सरकारी नौकरी के लिए अलग-अलग जगह देहातों में जाना पड़ा। उनके वहाँ पहुँचने के पहले ही उनकी जाति का पता उन लोगों को पता चल जाता था। जिसके कारण उसका प्रभाव उनके रहन-सहन और उनके काम-कज पर होता था।

कौसल्या बैंसंती ने 'दोहरा अभिशाप' आत्मकथा में देश, काल, वातावरण का विशेष ध्यान रखा है। आत्मकथा का प्रारंभ ही दलित बस्ती की

REYNO

गरीबी, गंदगी, छुआछूत, अंधविश्वास, बाबा साहब के प्रभाव से परिचित कराना है।

संवाद

दोहरा अभिशाप 'कौसल्या बैसंती की आत्मकथा है, जिसमें लेखिका अपने जीवन में घटित घटनाओंका जिक्र करती है। यह आत्मकथा स्वयं कथनिय है। जैसे की लेखिका अपने जीवन के अनुभव स्वयं बता रही है। इसी कारण इस जीवनी में संवाद बहोत कम दिखाई देते है। इस जीवनी में छोटे-छुटकुले संवाद, वर्णनात्मक संवाद, विस्तीर्ण संवाद दिखाई देते है।

"चलो, तुम्हारे घर के आसपास का हम निरीक्षण करेंगे," ऐसे चीफ इंजीनियर लेखिका को कहते है।

"सर, इसके घर से नल का मेन कनेक्शन बहुत दूर है। वहाँ तक पाइप लगवाने के लिए बहुत खर्चा आएगा, क्या ये लोग दे पाएँगे? इसके माँ-बाप तो मजदूर है मिल में।"
ऐसे नल कनेक्शन के सिलसिले में लेखिका जब नगरपालिका जाती है, तब कॉलनी में रहनेवाला उनसे जलनेवाला आदमी लेखिका और इंजिनियर को कहता है।

"वे लोग अपना खर्चा उठाकर नल लगवाने को कह रहे है और वे पानी का टैक्स भी देंगे तो तुम्हें क्यों आपत्ति है? इन्हें कनेक्शन दो।"
इंजीनियर साहब उस नायडू जाती के आदमी को

REYNO

फटकारते हुए कहते है।

"अगर हिंदू हमें अपनी बराबरी का नहीं समझेंगे तो हम धर्मान्तर करेंगे।"
ऐसा कस्तूरचंद पार्क में बाबासाहेब आंबेडकर भाषण देते समय जनता को कहते है।

"ब्राम्हणों के घर 'देव्हारा' होता है, उनको दिखाने के लिए हमने भी 'देव्हारा' बनाया कि हम भी श्रेष्ठ है।"
ऐसा लेखिका की भाई की पत्नी लेखिका के माँ को कहती है।

"तुम मेरे पति से इतना काम करवाती हो और उनकी कद्र भी नहीं करती। कई वर्षो से एक पैसा भी नहीं बढ़ाया। अब मैं यहाँ नौकरी नहीं करने दूँगी। चाहे हम भूखे ही रहें, परंतु यहाँ काम नहीं करने दूँगी।"
ऐसे लेखिका की माँ गुस्से से पैसे न बढ़ाने के सिलसिले बेकरीवाली से कहती है।

'ये हरिजन बाई जा रही है। दिमाग तो देखो, इसका बाप तो भिखमंगा है, साइकिल पर जाती है।"
उच्चवर्गीय लड़का ताने देते लेखिका को बोलता है।

"चलो मैं तुम्हें डॉक्टर के पास ले जाता हूँ। वहाँ बड़ी भीड़ रहती है। तुम्हारा नंबर बहुत देर बाद आएगा।'
ऐसे दरबान लेखिका को कहता है।

"आप इंस्पेक्टर हैं, यह हम कैसे जानें? पहले आप अपनी वर्दी पहनकर आएँ और हमारे नाम का वारंट भी दिखाइए।"
ऐसे लेखिका इंस्पेक्टर को ताने का आधार लेके उत्तर देते वक्त बोलती है।

'मुझे तुम लोगों को स्कॉलरशिप देने का काम सौंपा गया था। वह काम अब दूसरे व्यक्ति को दिया गया है। आप लोग अगले रविवार को नौ बजे उनके घर जाना।'

"तुम लोग अपने माँ-बाप या बीमार को टट्टी-पेशाब से भी नाक-भौं सिकोड़ते हो और हमें देखो, पेट की खातिर ऐसा काम करते हैं।"
लेखिका जब नाक पर बदबू आने से रुमाल रखती है, तब जमादार उसे ऐसे बोलता है।

REYNO

संदर्भसूची

1. 'दोहरा अभिशाप' उपन्यास :-
कौसल्या बैसंत्री

2. दलित साहित्य विविध आयाम :-
डॉ. सुनिता सोखारे

3. हिंदी आत्मकथा :-
डॉ. सविता सिंह

4. कौसल्या बैसंत्री : संपूर्ण साहित्य का मूल्यांकन :
डॉ. निहारे गिते.

प्रतिज्ञापत्र

हम शपथपूर्वक घोषित करते हैं कि, प्रस्तुत प्रोजेक्ट लेखन का कार्य हमारे खुद के प्रयत्नों का परिणाम है। हमारी जानकारी के अनुसार इस विषय पर अब तक स्वतंत्र रूप से कोई कार्य संपन्न नहीं हुआ है। यह प्रोजेक्ट हमारे विषय अध्यापकों के मार्गदर्शन तथा संदर्भ स्त्रोतों के आधार पर संपन्न हुआ है।

अ. क्र.	छात्रों के नाम	रोल नं	हस्ताक्षर
1	ऋषिकेश उत्तम भोसले	5511	R.U.Bhosale
2	मित्तल सर्जेराव खोत	5588	
3	केदार विजय मधाळे	5611	
4	अमृता महादेव संकपाळ	5682	Sankpal